International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में वैदिक कालीन शिक्षा की उपादेयता

डा० रेनू कुमारी
असिस्टेंट प्रोफेसर
स्वामी विवेकानन्द कॉलिज ऑफ एजूकेशन
मतलबपुर, रूड़की (उत्तराखण्ड)

सारांश

आज के युग में नैतिक मूल्यों का ह्रास होता जा रहा है। वैदिक शिक्षा सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचय, तप, दया और क्षमा जैसे गुणों को केंद्र मे रखती है। इससे व्यक्ति मनैतिक एवं चारित्रिक बल का विकास होता है। वैदिक शिक्षा केवल किताबी ज्ञान नहीं थी, बल्कि यह शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास पर बल देती थी। आज की शिक्षा प्रणाली में जहाँ केवल अंकों की होड है, वहाँ वैदिक दृष्टिकोण से संपूर्ण विकास को संभव बनाया जा सकता है। वैदिक शिक्षा विद्या अमृतअश्नुतेष की भावना से प्रेरित है, जिसमें ज्ञान को मोक्ष (आध्यात्मिक मुक्ति) तक पहुँचाने का साधन माना गया है। यह शिक्षा व्यक्ति को केवल जीविकोपार्जन नहीं सिखाती, बल्कि जीवन जीने की कला सिखाती है। गुरुकुल प्रणाली में गुरु और शिष्य का संबंध अत्यंत घनिष्ठ होता था। आज के भीड़–भाड़ वाले स्कूंलो में यह व्यक्तिगत शिक्षण संभव नही हो पाता। वैदिक शिक्षा की यह विशेषता आज कशिक्षण संस्थानों के लिए एक अनुकरणीय मॉडल बन सकती है। वैदिक शिक्षा प्रकृति के साथ समन्वय पर बल देती थी। आज जब पर्यावरण संकट गहराता जा रहा है, वैदिक शिक्षा हमें प्रकृति के संरक्षण और संतुलन की भावना सिखा सकती है। वर्तमान समय में मानसिक तनाव और चिंता एक आम समस्या बन चुकी है। वैदिक शिक्षा ध्यान, प्रार्थना, और स्वाध्याय द्वारा आत्म–ज्ञान को बढावा देती है, जिससे मानसिक शांति और संतुलन प्राप्त होता है। वैदिक काल में शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को समाज के प्रति उत्तरदायी बनाना था। आज के युग में जब व्यक्ति आत्मकेंद्रित होता जा रहा है, तब वैदिक शिक्षा सेवा, त्याग और कर्तव्य भावना को पुनर्जीवित किया जा सकता है।

कुंजी शब्द–वैदिक कालीन शिक्षा, वर्तमान शिक्षा

प्रस्तावना

भारतवर्ष की शिक्षा प्रणाली का इतिहास अत्यंत प्राचीन एवं गौरवशाली रहा है। वैदिक शिक्षा प्रणाली भारतीय ज्ञान परम्परा की आधारशिला रही है, जिसने न केवल बौद्धिक विकास को बल्कि नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक उन्नति को भी प्राथमिकता दी। आज जब हम नैतिक पतन, सामाजिक विषमता और मानसिक तनाव के युग में जी रहे हैं, तब वैदिक शिक्षा

की पुनर्समीक्षा और पुनर्प्रस्थापना की आवश्यकता अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। वैदिक कालीन शिक्षा ऐसा कोई भी दोश नहीं है, जहाँ ज्ञान के प्रति प्रेम का इतने प्राचीन समय में प्रारम्भ हुआ हो, या जिसने इतना स्थायी और शक्तिशाली प्रभाव उत्पन्न किया हो। शिक्षा और ज्ञान भारतवासियों के लिए नवीन नहीं है। वैदिक युग से लेकर आज तक भारत में शिक्षा का मूल तात्पर्य यह रहा है कि शिक्षा प्रकाश का वह स्रोत है, जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हमारा सच्चा पथ–प्रदर्शक है। प्राचीन काल में भारतीयों का दृढ़ विश्वास था कि शिक्षा से विकसित बुद्धि ही यथार्थ बल है। उन्होंने दृढ़ता से कहा था कि शिक्षा कल्पवृक्ष के समान हमारे समस्त मनोरथों को सिद्ध करती है। विद्या के बिना मनुष्य पशु समझा जाता था। प्राचीन काल में शिक्षा का तात्पर्य उस अर्न्तज्योति और शक्ति से था जिससे मानव के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक तथा आत्मिक बलों का सन्तुलित विकास हो सकता था।

वेदों में शिक्षा (विद्या): मोक्ष प्राप्ति का साधन

विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयॅ् सह।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते।।

यजुर्वेद 40 / 14

जो मनुष्य विद्या और अविद्या के स्वरूप को साथ–साथ जानता है, वह अविद्या अर्थात् कर्मोपासना से मृत्यु को तरके विद्या अर्थात् यथार्थ ज्ञान से मोक्ष प्राप्त होता है। विद्या के विषय में वेदों में बहुत कुछ कहा गया है–

विद्या अनश्वर धन है।

न ता नशन्ति न दभाति तस्करो नासामामित्रो व्यथिरो दधर्षति।
देवांश्च याभिर्यजते ददाति च ज्योगित्ताभिः सचते गोपतिः सह।।

अथर्ववेद 4 / 21 / 3

विद्यायें कभी नष्ट नहीं होती है, यह अनश्वर हैं। विद्या–धन काचोर चुरा नहीं सकते, दुःखदायी शत्रु भी इसका तिरस्कार नहीं कर सकते। विद्या धन वह धन है जिसके द्वार

देवयज्ञादि पान्चयज्ञ किए जाते हैं और जिसका दान सर्वोत्तम है तथा इन्द्रियों के स्वामी जीवात्मा गोपति का निरन्तर इस विद्या के साथ सम्बन्ध रहता है अर्थात् मरने पर जीवात्मा के साथ केवल विद्या–धन ही जाता है, अन्य सांसारिक ऐश्वर्य यहीं रह जाते ह ौंजीवन में माधुर्य लाती है। सरस्वती को एक माता के रूप में प्रशंसा करते हुए कहा गया है कि वह सारे सुख देती है, कल्याण करती है सारे मनोरथ पूर्ण करती है।

- विद्या मानव को जीवन शक्ति, प्राण शक्ति, यश और प्रतिष्ठा देती है।
- सरस्वती अपने भक्तों की सभी कामनायें पूर्ण करती है।
- विद्या योगक्षेम (रायस्पोश) प्रदान करती है।
- यह मानव को अक्षय वैभव और श्री प्रदान करती है।

वैदिक शिक्षा में संयम (ब्रह्मचर्य) को बहुत महत्व दिया गया है। इस संयम के द्वारा ही मनुष्य मृत्यु पर विजय प्राप्त करता है और सदा हृष्ट–पुष्ट रहता है।

मनुस्मृति में शिक्षा

अभ्दिर्गात्राणि शुद्ध्यन्ति मनः सत्येन शुद्ध्यति।
विद्यातपोभ्यां भूतात्मा बुद्धिर्ज्ञानेन शुद्ध्यति।।

मनुस्मृति 5/109

जल से शरीर की शुद्धि होती है, मन सत्य से शुद्ध होता है, विद्या और तप से आत्मा की शुद्धि होती है और बुद्धि ज्ञान से शुद्ध होती है।

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्।।

मनुस्मृति 6/91

मनुस्मृतिकार ने जहाँ धर्म के दस लक्षण बताये उसी में विशेषरूप से विद्या को भी धर्म में सम्मिलित किया है।

उपनिषदों में शिक्षा (परा तथा अपरा विद्या)

द्वे विद्ये वेदितव्ये इति ह स्म।
यद् ब्रह्मविदो वदन्ति परा चैवापरा च।।

मुण्डकोपनिषद 1/1/3–4

इनमें ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरूक्त, छन्द, ज्योतिष का ज्ञान 'अपरा' विद्या है। मोक्ष भी प्रकृति के ही सहारे से होता है परन्तु जैसे प्रकृति से संसार उत्पन्न हुआ है, उस प्रकृति से उत्पन्न हुआ मोक्ष प्रकृतिरूप नहीं होता।

इहलोक तथा प्रलोक के सन्दर्भ में शिक्षा

कुछ विचारक वैदिक कालीन शिक्षा की आलोचना करते हैं कि यह शिक्षा केवल परलोक के लिए थी। परन्तु यह केवल भ्रान्ति है। वैदिक काल में दोनों प्रकार अर्थात् **'परा'** तथा **'अपरा'** विद्या पर ध्यान दिया जाता था।

संसार में धन–धान्य तथा समृद्धि देने वाली **'अपरा'** है तथा संसार के बन्धन से मोक्ष दिलाकर परमात्मा की प्राप्ति कराने वाली **'परा'** विद्या है। आध्यात्मिकता का यह अर्थ नहीं कि संसार को हम मिथ्या कहें। धन–सम्पत्ति को बेकार कह। मानव में शरीर यथार्थ, शरीर में आत्मा यथार्थ है। जीवन का संचार करने वाला परमात्मा भी यथार्थ है।

'संसार का भोग करो परन्तु संसार के भोग में ऐसे लिप्त न हो जाओ कि अपनी सुध–बुध ही भूल जाओ।' आत्मा शरीर के बिना, परमात्मा प्रकृति के बिना अपने चैतन्य–स्वरूप को प्रकट नहीं कर सकता है, आत्मा के लिए शरीर और परमात्मा के लिए प्रकृति का विकास उतना ही आवश्यक है जितना कर्ता के लिए, कारीगर के लिए उसके साधन का, उपकरण का उत्तम से उत्तम होना आवश्यक है। भारतीय दार्शनिकों ने कहा कि सच्ची संस्कृति वह है जो परलोक और इहलोक, अध्यात्म और भौतिक जीवन, आत्मा और शरीर–इन सबका समान रूप से हित और कल्याण सम्पादित करती है। यही कारण है कि ऋषियों ने यह प्रतिपादित किया था कि संसार का जो प्रत्यक्ष जीवन है, उसको जाने बिना मनुष्य सर्वदर्शी नहीं हो सकता। सम्पूर्ण या सर्वज्ञान के लिए मनुष्य के लिए भौतिक जीवन का ज्ञान भी आवश्यक है। इहलोक के जीवन

की उपेक्षा करके काम नहीं चल सकता। हमारा सांस्कृतिक दृष्टिकोण अधूरा रह जाता है यदि हम इहलोक की उपेक्षा पर केवल परलोक की ही कामना करें। मनुष्य को इस लोक और प्रत्यक्ष जीवन में जो सुख व कल्याण प्राप्त होता है उसकी उपेक्षा करना उचित नहीं है। वैदिक संस्कृति के अनुसार मनुष्य सर्वांगींण विकास वांछनीय है। शरीर, मन और आत्मा, इहलोक और परलोक, भौतिक सुख आध्यात्मिक सन्तोष सब क्षेत्रों में एक साथ उन्नति द्वारा ही मनुष्य अपनी वास्तविक उन्नति कर सकता है। वैदिक संस्कृति के अनुसार मनुष्य जहाँ धर्म, अर्थ और काम को प्राप्त कर सकता है। वहाँ साथ ही मोक्ष को अपना अन्तिम उद्देश्य मानता है। केवल अर्थ और काम को प्राप्त करके या केवल मोक्ष की प्राप्ति में तत्पर होकर मनुष्य अपनी उन्नति नहीं कर सकता। धर्म पर चलकर अर्थ की उपलब्धि करने, धर्मानुसार काम का सेवन करने और मोक्ष को अन्तिम लक्ष्य बनाकर ही मनुष्य अपनी सर्वांगींण उन्नति कर सकता है–यही वैदिक संस्कृति का आधारभूत सिद्धान्त है। आत्मा, परमात्मा, जीवन, पुर्ने साथ–साथ हमने जन्म, मोक्ष आदि पर बल देने के भारतीय दर्शन के अन्य महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है। भारतीय दार्शनिकों ने अच्छे तथा आदर्श जीवन पर पर्याप्त प्रकाश डाला है। 'अच्छे जीवन' के लिए चार तत्वों के उचित मिश्रण की अत्यन्त आवश्यकता है। ये हैं – धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष। काम को पुरूषार्थ की भी संज्ञा दी जाती है।

वैदिक दर्शन ने मोक्ष को सबसे महत्वपूर्ण माना है। अन्य तीनों तत्व इसी लक्ष्य की प्राप्ति के साधन हैं। आध्यात्मवाद का दूसरा रूप मोक्ष ही कहा जा सकता है। मोक्ष प्राप्ति कलिए आवश्यक हकि मानव अच्छे कर्म करे। जीवन में उच्च मूल्यों पर आचरण करे। अर्थ अथवा धन, मोक्ष की प्राप्ति का साधन है, साध्य नहीं। यदि धन अच्छे तरीकों से कमाया जायं और अच्छे कार्यों में खर्च किया जायं तभी मोक्ष प्राप्त हो सकता है। मोक्ष प्राप्ति से जीवन संसार के दुःखों से छूट सकता है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 के अनुसार शिक्षा

भारत विविध संस्कृतियों वाला समाज है जो अनेक प्रादेशिक व स्थानीय संस्कृतियों से मिलकर बना है। लोगों की धार्मिक विश्वास, जीवन शैली व सामाजिक सम्बन्धों की समझ

एक–दूसरे से बहुत अलग है। सभी समुदायों को सह–अस्तित्व व समान रूप से समृद्ध होने का अधिकार है और शिक्षा व्यवस्था को भी हमारे समाज में निहित इस सांस्कृतिक विविधता के अनुरूप होना चाहिए। अपनी सांस्कृतिक विरासत और राष्ट्रीय अस्मिता को सुदृढ़ करने के लिए पाठ्यचर्या ऐसी होनी चाहिए कि वह युवा पीढ़ी को इसके लिए सक्षम बना सके कि वह नयी प्राथमिकताओं व बदलते परिप्रेक्ष्य में अतीत का पुर्नमूल्यांकन व पुर्नव्याख्या कर पाए। इस सन्दर्भ में युवा पीढ़ी में अपने कर्तव्यों एवं अधिकारों के प्रति एक नागरिक चेतना व संविधान में निहित सिद्धान्ता के प्रति प्रतिबद्धता की रचना पर्वापेक्षित है।

'लोकतन्त्र प्रत्येक व्यक्ति के मनुष्य के रूप में सम्मान व योग्यता में आस्था पर आधारित होता है.....अतः लोकतान्त्रिक शिक्षा का उद्देश्य है व्यक्तित्व का पूर्ण व चहुँमुखी विकास – अर्थात् एक ऐसी शिक्षा जो विद्यार्थियों को एक समुदाय में जीने की बहुआयामी कला में दीक्षित करे। बहरहाल, यह स्पष्ट है कि एक व्यक्ति अकेले न तो रह सकता है न ही विकसित हो सकता है.....उस शिक्षा का कोई लाभ नहीं जो अपने साथी नागरिकों के साथ शालीनता, सामन्जस्य, कार्यकुशलता के साथ जीने की शैली के लिए आवश्यक गुणों को पोषित न करती हो।' शिक्षा में गुणवत्ता के अर्न्तगत जीवन के सभी आयामों के गुणवत्ता सम्बन्धी सरोकार शामिल हैं।

शोध समस्या का उदय

स्वयं यह अनुभव किया कि प्राचीन भारतीय संस्कृति व विचारों की सम–सामयिकता वर्तमान में अधिक प्रासंगिक हो सकती है। हमारी वैदिक शिक्षा प्रणाली हमारी मार्गदर्शक सिद्ध हो सकती है जिन परिस्थितियों एवं समस्याओं को हम आज अनुभव कर रहे हैं उन्हें वर्षों पूर्व हमार प्राचीन मनीषियों ने समझा, परखा तथा उनका समाधान भी प्रस्तुत किया किन्तु जन–साधारण की यह मान्यता दृढ़ से दृढ़तर होती जा रही है कि केवल पाश्चात्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का अनुसरण करने से हम श्रेष्ठ जीवन स्तर प्राप्त कर सकते हैं ं शैक्षिक परम्परा का अध्ययन। शोधार्थी नप्राचीन भारतीय जीवन एवकरना उचित समझा, जिससे यह ज्ञात हो सके कि कला, साहित्य, ज्ञान–विज्ञान की दृष्टि से तो वर्षों पहले ही हमारा राष्ट्र एक समृद्ध व

सशक्त देश था किन्तु शिक्षा के क्षेत्र में भी वह पिछड़ा हुआ नहीं था।

शोध समस्या कथन

वर्तमान परिप्रेक्ष्य मे वैदिक कालीन शिक्षा की उपादेयता

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रयुक्त किए गए शब्दों की परिभाषीकरण

वैदिक शिक्षा

वैदिक शिक्षा पूर्णतः वेदों पर आधारित थी। वेदों की संख्या चार है। मान्यता है कि चारों वेदों का ज्ञान अलग–अलग चार ऋषियों को ईश्वर ने कराया था।

1. ऋग्वेद की ऋचाओं द्वारा ईश्वर, आत्मा–पुर्नजन्म, जीव, सृष्टि, प्रलय, कर्मफल, वर्षा, आश्रम एवं अध्ययन आदि का ज्ञान निहित है।
2. यजुर्वेद में तत्कालीन शिक्षा व्यवस्था के सन्दर्भ में शिक्षा, समाज, सोलह संस्कार, राज्य, गणित, रसायन, ज्योतिष वैधक, मन्त्र, युद्ध, संगीत, आहार, भवन निर्माण का ज्ञान निहित है।
3. सामवेद के अन्तर्गत वैदिक ऋचाओं के गायन द्वारा देवताओं की स्तुंति एवं आह्वान का ज्ञान निहित है।
4. अथर्ववेद में सांसारिक ज्ञान–विज्ञान का समन्वय करते हुए अर्थ की प्राप्ति एवं जीवन के निर्वाह सम्बन्धी लक्ष्य को प्राप्त करना है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य मे शिक्षा

बालक की व्यक्तिगत रूचियों क्षमताओ, योग्यताओ तथा सामाजिक आदर्शों को ध्यान में रखते हुए आवश्यकतानुसार स्वतन्त्रता प्रदान करके उसका बौद्धिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक विकास करती है एवं उसके व्यवहार में इस प्रकार से परिवर्तन करती है कि व्यक्ति तथा समाज दोनों ही उन्नति के शिखर पर चढ़ते रहें।

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्य

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में वैदिक शिक्षा प्रणाली में वर्णित विषय वस्तु का विवेचन कर वर्तमान परिपेक्ष्य में उसकी समसामयिकता ज्ञात करने के लिए निम्न उद्देश्यों का अध्ययन किया गया है–

1 वर्तमान परिप्रेक्ष्य में वैदिक शिक्षा प्रणाली के उद्देश्यों का अध्ययन।

2 वर्तमान परिप्रेक्ष्य में वैदिक शिक्षा प्रणाली के पाठ्यक्रम का अध्ययन।

3 वर्तमान परिप्रेक्ष्य में वैदिक शिक्षा प्रणाली शिक्षण विधियों का अध्ययन।

4 वर्तमान परिप्रेक्ष्य में वैदिक शिक्षा प्रणाली शिक्षक–शिक्षार्थी सम्बन्धों का अध्ययन।

5 वर्तमान परिप्रेक्ष्य में वैदिक शिक्षा प्रणाली विद्यालय व्यवस्था का अध्ययन।

प्रस्तुत शोध अध्ययन की आवश्यकता

समाज में वही संस्कृति, परम्परा एवं सदाचारपूर्ण जीवन तथा ज्ञान से परिपूर्ण शैक्षिक व्यवस्था को पुनः स्थापित करने के लिए हमें अपने धार्मिक ग्रन्थों का अध्ययन, प्राचीन शिक्षा प्रणाली का अध्ययन एवं उसकी दिव्यता को आत्मसात करने की आवश्यकता है। इसके लिए अगाध भक्ति रस से सरस, मधुर गहन अनुभूति और मनोवैज्ञानिक भाव विश्लेषण से परिपूर्ण वैदिक शिक्षा प्रणाली में वर्णित समस्त परिवेश मुख्यतः शैक्षिक परिवेश के अध्ययन की आवश्कता है क्योंकि शिक्षा ही एक ऐसा साधन है जिससे समाज की प्रत्येक गतिविधि को बदला जा सकता है।

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

सरोज अग्रवाल (2013) ने अपना शोध प्रबन्ध 'शिक्षा त्रय की संकल्पना एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य

में उपयोगिता का अध्ययन' सिंघानिया विश्वविद्यालय, झुंझुनू में प्रस्तुत किया। इस अध्ययन में शोधार्थी इस निष्कर्ष पर पहुॅची–शिक्षा दर्शन के दृष्टिकोण से प्राचीन भारतीय दशर्नों पर अब तक जितना अनुसन्धान हुआ है उससे इस प्रकार की भ्रान्ति होती है मानो भारतीय दर्शन मात्र ऐतिहासिक विवेचन की वस्तु है। आधुनिक युग के सन्दर्भ में उसके पास कुछ भी देने को नहीं है। उसमें कुछ भी शाश्वत व चिरन्तन नहीं है, सब कुछ सामयिक था और समय परिवर्तन के साथ उसकी उपयोगिता समाप्त हो गयी है। दूसरी भ्रान्ति यह है कि मध्यकालीन युग में ही भारतीय चिन्तन अवरूद्ध हो गया था। भारतीय दर्शन जिनका आधार ही शाश्वत मूल्य है के विषय में इस प्रकार की धारणा अनर्थकारी व अशु है।

छाया धामा (2014) ने अपना शोध प्रबन्ध **'श्रीमद् भगवत्गीता में निहित शैक्षिक विचारों का समालोचनात्मक अध्ययन एवं वर्तमान वैश्विक स्थिति के सन्दर्भ में उपादेयता का मूल्यांकन' सी0एम0जे0 विश्वविद्यालय, मेघालय में प्रस्तुत किया।** इस अध्ययन में शोधार्थी इस निष्कर्ष पर पहुॅची– श्रीमद्भगवतगीता दर्शन द्वारा प्रस्तुत बाल विकास की संकल्पना भारतीय मनोविज्ञान के ठोस सिद्धान्तों पर आधारित है। बालक के विकास को समझने हेतु यह अध्यापक को अर्न्तदृष्टि प्रदान करती है, क्योंकि इसमें शरीर, इन्द्रियां, मन, अहंकार एवं बुद्धि आदि विभिन्न ज्ञानात्मक अंगों के विकास की क्रमिक विवेचना है। किसी भी पाठ्यक्रम की उपयोगिता का आधार उसमें निहित ज्ञान शाखाओं की प्रकृति निर्धारित करती है। श्रीमद्भगवतगीता दर्शन में प्रतिपादित विषय विकास की अवस्थाओं के अनुसार होने के कारण पूर्णतया मनोविज्ञान है। यह एकांगी भी नहीं है क्योंकि इसमें आध्यात्मिक एवव्यावहारिक दोनों ही प्रकार के विषयों को समान महत्व एवं समान प्रतिनिधित्व प्रदान किया गया है।

विकास शुक्ला (2021) ने अपना शोध प्रबन्ध **'बौद्धधर्म के शैक्षिक विचारों की वर्तमान सन्दर्भ में प्रासंगिकता का अध्ययन' एम0जे0पी0 रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली में प्रस्तुत किया।** इस अध्ययन में शोधार्थी इस निष्कर्ष पर पहुॅचा– बौद्धधर्म के दार्शनिक विचारों में समाज को सशक्त बनाने के लिए मुख्यतः सत्य, अहिंसा, प्रेम, दया, त्याग, परोपकार, सहानुभूति, संयम तथा सेवा आदि का मनुष्य के हृदय में होना परम आवश्यक माना गया है। भगवान बुद्ध के सामाजिक एवं दार्शनिक विचारों में 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' का लोक कल्याणकारी आदर्श समाविष्ट

है। बौद्धधर्म में शिक्षा की पाठ्यचर्या में लौकिक एवं परलौकिक दोनों प्रकार के विषयों एवं क्रियाओं को स्थान दिया गया। उनकी यह बात सिद्धान्त रूप में तो अच्छी है परन्तु बौद्धधर्म एवं दर्शन की शिक्षा पर सर्वाधिक बल देकर उन्होंने अपनी धर्म संकीर्णता का परिचय ही दिया है। आज के युग में शिक्षा के क्षेत्र में किसी दर्शन अथवा धर्म पर सर्वाधिक बल देने की बात किसी को स्वीकार नहीं हो सकती।

शोध विधि एवं प्रारूप

दार्शनिक तथा ऐतिहासिक शोध

दर्शन के अर्न्तगत शोधार्थी को कार्य करने तथा अर्थापन की स्वतन्त्रता अधिक होती है। इस प्रकार दार्शनिक शोध व्यक्तिनिष्ठ रूप में किया जाता है। ऐतिहासिक शोध पूर्ण रूप से उपलब्ध अवशेषों तथा आलेखों से होता है जबकि दार्शनिक शोध का सम्बन्ध मानव जीवन के अस्तित्व पर निर्भर होता है। प्रस्तुत अध्ययन विशुद्ध रूप से ऐतिहासिक अन्वेषण है। अतः इस शोध समस्या की अन्वेषण पद्धति भी ऐतिहासिक है।

प्रस्तुत अध्ययन के ऑकड़े संग्रहण के स्रोत

दार्शनिक शोध में ऐतिहासिक उपागम को प्रयोग करते हुए प्रस्तुत अध्ययन की शोध प्रक्रिया में निम्नलिखित सोपानों का अनुसरण किया गया है–

तथ्यों का संकलन

प्राथमिक स्रोत

ये प्रदत्त के मौलिक एवं मूल स्रोत हैं। यह विषय वस्तु के मूल भण्डार हैं। प्रस्तुत अध्ययन हेतु जो तथ्य प्रत्यक्ष रूप में माध्यमिक स्तर के पाठ्यक्रम जो सरकारी स्रोतों के माध्यम से प्राप्त किए गए है वे प्राथमिक स्रोत हैं।

द्वितीयक स्रोत

द्वितीयक स्रोत के रूप में उन उपकरणों एवं साधनों को सम्मिलित किया गया है जिनका लेखक, दार्शनिक चिन्तन के प्रति अन्य व्यक्तियों द्वारा अपने विचार व्यक्त किए गए ह। अतः

महान मनीषियों, ज्ञानियों, आलोचकों, समालोचकोद्वारा दिए गए शैक्षिक विचारोको सम्मिलित किया गया है।

शिक्षा के क्षेत्र में दार्शनिक विधि का प्रयोग विस्तृत तथा व्यापक रूप में
किया है। तथ्यों का विश्लेषण एवं व्याख्या

वैदिक शिक्षा प्रणाली एवं आधुनिक शिक्षा प्रणाली में विद्यमान विभिन्न परिस्थितियों का गहनतापूर्वक विवेचनात्मक अध्ययन करके उनकी व्याख्या की गयी है। इससे उनमें निहित शैक्षिक पृष्ठभूमि एवं निहित विभिन्न शैक्षिक विचार उभर कर आये हैं।

प्रस्तुत शोध के निष्कर्श एवं परिणाम

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में वैदिक शिक्षा प्रणाली के उद्देश्यों

क्र० सं०	वैदिक शिक्षा प्रणाली में शिक्षा के उद्देश्य	वर्तमान शिक्षा प्रणाली में शिक्षा के उद्देश्य
1	वैदिक शिक्षा का मुख्य उद्देश्य मोक्ष की प्राप्ति था तथा वैदिक माध्यमिक स्तर पर मोक्ष के लिए वातावरण तैयार करना था।	वर्तमान माध्यमिक शिक्षा का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थी का सर्वांगींण विकास।
2	वैदिक माध्यमिक शिक्षा में चरित्र निर्माण करना भी मुख्य उद्देश्य था	वर्तमान माध्यमिक शिक्षा में चरित्र निर्माण गौण उद्देश्य हो गया है।
3	वैदिक माध्यमिक शिक्षा में जीविकोपार्जन शिक्षा का अन्य मुख्य उद्देश्य था।	वर्तमान माध्यमिक शिक्षा में निश्चित स्तर की शिक्षा दी जाती है, जो जीविकोपार्जन हेतु पूर्ण नहीं है।
4	वैदिक माध्यमिक शिक्षा का उद्देश्य वैदिक संस्कृति का संरक्षण और विकास करना था।	वर्तमान माध्यमिक शिक्षा का उद्देश्य बहु–सांस्कृतिक संस्कृति को बनाये रखना इसका उद्देश्य है।
5	वैदिक माध्यमिक शिक्षा का उद्देश्य वसुधैवकुटुम्बकम की भावना का विकास करना भी था।	वर्तमान माध्यमिक शिक्षा में वैश्वीकरण की भावना के अर्न्तगत शिक्षा, तकनीकी और व्यापार के क्षेत्र में समावेश करना है।
6	वैदिक शिक्षा में विद्यार्थियों की नेतृत्व क्षमता का विकास।	वर्तमान शिक्षा में विद्यार्थियों की नेतृत्व क्षमता का विकास जैसे– उच्च कक्षा के विद्यार्थी आदि।

7	वैदिक माध्यमिक शिक्षा सह–अस्तित्व पर आधारित थी।	वर्तमान शिक्षा व्यक्तिगत विकास पर आधारित है।
8	विद्यार्थियों को ध्यान में रखकर गुरू द्वारा अपनी बात प्रस्तुत की जाती थी।	शैक्षिक वातावरण को ध्यान में रखकर शिक्षक द्वारा अपनी बात किया जाना।
9	गुरू द्वारा विद्यार्थियों के समक्ष आदर्श व्यक्तित्व प्रस्तुत किया जाता था।	शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों के समक्ष दोहरा व्यक्तित्व प्रस्तुत किया जाता है।
10	समायोजनशीलता का विकास अ–विद्यार्थियों के व्यक्तिगत एवं सामाजिक समायोजन को प्रोत्साहित किया जाता है।	समायोजनशीलता का विकास अ–विद्यार्थियों के व्यक्तिगत समायोजन को प्रोत्साहित ही प्रोत्साहित किया जाता है।
11	वैदिक शिक्षा में आध्यात्मिक शिक्षा के उद्देश्य निर्धारित थे। जैसे– प्रातःसभाओं में प्रार्थना एवं योग इत्यादि।	वर्तमान शिक्षा में आध्यात्मिक शिक्षा का कोई उद्देश्य निर्धारित ही नहीं है।
12	वैदिक शिक्षा के उद्देश्य आदर्शवादी थे।	वर्तमान शिक्षा के उद्देश्य व्यावहारिक हैं।
13	वैदिक शिक्षा क्रिया–केन्द्रित नहीं थी।	वर्तमान शिक्षा क्रिया–केन्द्रित हैं।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य मे वैदिक शिक्षा प्रणाली के पाठ्यक्रम का अध्ययन

क्र० सं०	वैदिक शिक्षा प्रणाली में पाठ्यक्रम	वर्तमान शिक्षा प्रणाली में पाठ्यक्रम
1	वैदिक कालीन पाठ्यक्रम का निर्माण गुरू के द्वारा स्वयं ही किया जाता था और गुरू समय की माँग के अनुरूप पाठ्यक्रम का निर्धारण कर लेते थे। इस काल में पाठ्यक्रम का आधार स्थानीय मॉग होती थी।	वर्तमान शिक्षा प्रणाली के पाठ्यक्रम का निर्माण राष्ट्रीय एवं प्रदेशीय शिक्षा परिशदों के माध्यम से किया जाता है। वर्तमान शिक्षा के पाठ्यक्रम का निर्माण स्थानीय एवं राष्ट्रीय माँगों के अनुरूप किया जाता है, जिसमें लगभग 42 परिषद संलग्न है।
2	वैदिक शिक्षा प्रणाली का पाठ्यक्रम धार्मिक, आध्यात्मिक एवं भौतिक था।	वर्तमान शिक्षा प्रणाली में पाठ्यक्रम मात्र भौतिक है।

3	वैदिक कालीन पाठ्यक्रम में विद्यार्थियों की रूचि एवं इच्छा को कोई भी स्थान प्राप्त नहीं था।	वर्तमान शिक्षा प्रणाली के पाठ्यक्रम का चयन विद्यार्थी अपनी स्वयं की इच्छा एवं रूचि के अनुरूप कर सकता है जैसे– कला, विज्ञान, वाणिज्य वर्ग इत्यादि।
4	वैदिक शिक्षा प्रणाली में विभिन्न वर्गों के लिए अलग–अलग शिक्षा का पाठ्यक्रम निर्धारण किया जाा था जैसे– ब्राह्मणों के लिए पुरोहितीय शिक्षा, क्षत्रियों के लिए सैनिक शिक्षा तथा वैश्यों के लिए कृषि एवं व्यावसायिक शिक्षा दिए जाने का प्रावधान था।	वर्तमान शिक्षा प्रणाली में पाठ्यक्रम किसी भी वर्ग विशेष के लिए निर्धारित ना होकर विद्यार्थी के इच्छा एवं योग्यता पर निर्भर करता है। वह स्वेच्छा से विषयों का चयन कर सकता है।
5	वैदिक माध्यमिक शिक्षा प्रणाली में पाठ्यक्रम में व्यवहारिक ज्ञान से परिचित होने के लिए करके सीखने पर बल दिया जाता था।	वर्तमान माध्यमिक शिक्षा में विभिन्न क्रियाओं द्वारा अधिगम पर बल दिया जाता है।
6	वैदिक शिक्षा प्रणाली का पाठ्यक्रम आध्यात्मिक था। इसमें माध्यमिक स्तर पर परा (आध्यात्मिक) विषय अध्ययन किए जाते थे जिसमें– वेद–वेदांग, उपनिषद, पुराण, दर्शन एवं नीतिशास्त्र आदि। अपरा (लौकिक) के अर्न्तगत इतिहास, ज्योतिष, भौतिक शास्त्र, प्राणी शास्त्र, भूगर्भ विद्या, तर्कशास्त्र इत्यादि।	वर्तमान शिक्षा का पाठ्यक्रम भौतिक है। पूर्व माध्यमिक स्तर एक भारतीय भाषा, गणित, सामान्य विज्ञान तथा सामाजिक अध्ययन आदि माध्यमिक स्तर पर एक भारतीय भाषा, भौतिक विज्ञान, गणित, जीव विज्ञान, संगीत, चित्रकला, गृह विज्ञान आदि। उत्तर माध्यमिक स्तर पर एक भारतीय भाषा, भौतिक विज्ञान, गणित, जीव विज्ञान, संगीत, चित्रकला, गृह विज्ञान आदि।
7	विद्यार्थियों को ललित कलाओं का प्रशिक्षण देना।	विद्यार्थियों को बहुआयामी कलाओं का प्रशिक्षण देना।

वर्तमान परिपेक्ष्य में वैदिक शिक्षा प्रणाली शिक्षण विधियों का अध्ययन

क्र० सं०	वैदिक शिक्षा प्रणाली में शिक्षण विधियाँ	वर्तमान शिक्षा प्रणाली में शिक्षण विधियाँ

1	वैदिक शिक्षा प्रणाली में ज्ञानात्मक पक्ष के विकास हेतु व्याख्यान, प्रश्नोत्तर, वाद–विवाद, संश्लेषण एवं विश्लेषण आदि शिक्षण विधियों का प्रयोग किया जाता था।	वर्तमान शिक्षा प्रणाली में ज्ञानात्मक पक्ष के विकास हेतु व्याख्यान, प्रश्नोत्तर, वाद–विवाद, संश्लेषण, विश्लेषण के अतिरिक्त शैक्षिक भ्रमण आदि शिक्षण विधियों का प्रयोग किया जाता है।
2	वैदिक शिक्षा प्रणाली में भावात्मक पक्ष के विकास हेतु एक ही गुरू से शिक्षा, गुरूकुल के सदस्यों द्वारा, उच्च कक्षाओं के विद्यार्थियों द्वारा निम्न कक्षाओं के विद्यार्थियों का शिक्षण, विद्यालय में व्यक्तित्व का भावात्मक विकास होता था।	वर्तमान शिक्षा प्रणाली में भावात्मक पक्ष के विकास हेतु शिक्षक वर्ग से अन्तःक्रिया, उच्च कक्षाओं के विद्यार्थियों को देखकर विकास, विद्यालय के व्यक्तित्व का भावात्मक विकास होता है।
3	वैदिक शिक्षा प्रणाली में क्रियात्मक पक्ष के विकास हेतु व्यावहारिक एवं प्रयोगात्मक शिक्षा का प्रावधान नहीं था।	वर्तमान शिक्षा प्रणाली में क्रियात्मक विकास हेतु व्यावहारिक एवं प्रयोगात्मक शिक्षण विधि जैसे– प्रदर्शन, योजना विधि, कम्प्यूटर अनुदेशन, प्रयोगशाला विधि आदि का प्रयोग किया जाता है।
4	वैदिक शिक्षा प्रणाली में पाठ्य सहगामी क्रियाओं का महत्व था जिसमें विद्यार्थियों द्वारा गुरूओं की गायों को चराना, लकडी काटना, फूल लाना, पेड़ों पर चढ़ना इत्यादि।	वर्तमान शिक्षा प्रणाली में पाठ्य सहगामी क्रियाओं का महत्वपूर्ण स्थान एवं उपयोग है जिनमें एन0सी0सी, स्काउट, खेलकूद, वाद–विवाद प्रतियोगिता, क्विज, सेमिनार इत्यादि।
5	वैदिक शिक्षा में श्रवण, मनन एवं निदिध्यासन शिक्षण विधि का प्रयोग किया जाता था।	वर्तमान शिक्षा में श्रवण, मनन एवं निदिध्यासन शिक्षण विधि का प्रयोग भी किया जाता है।
6	वैदिक काल में शिक्षा यन्त्रवत नहीं थी।	वर्तमान काल में शिक्षा यन्त्रवत है।
7	वैदिक शिक्षा पूर्णतया मौखिक थी। लिखित का स्थान नगण्य था, परन्तु प्रयोगात्मक मूल्यांकन भी किया जाता था।	वर्तमान शिक्षा मौखिक, लिखित एवं प्रयोगात्मक है। इसमें तीनों के आधार पर विद्यार्थियों का मूल्यांकन किया जाता है।
8	वैदिक शिक्षा में रटने पर बल दिया जाता था। जिससे सभी का ज्ञान समान था परन्तु बोध, व्याख्या एवं अर्थ अलग–अलग होता था।	वर्तमान स्तर पर बोध पर अधिक बल दिया जाता है।

वर्तमान परिपेक्ष्य में वैदिक शिक्षा प्रणाली शिक्षक–शिक्षार्थी सम्बन्धों का अध्ययन

क्र०सं०	वैदिक शिक्षा प्रणाली में शिक्षक–शिक्षार्थी सम्बन्ध	वर्तमान शिक्षा प्रणाली में शिक्षक–शिक्षार्थी सम्बन्ध
1	वैदिक शिक्षा प्रणाली में गुरू–शिष्य सम्बन्ध पिता–पुत्रवत् थे।	वर्तमान शिक्षा प्रणाली में शिक्षक–शिक्षार्थी सम्बन्ध क्रेता–विक्रेता के समान हैं।
2	वैदिक शिक्षा प्रणाली में गुरू–शिष्य सम्बन्ध भावात्मक एवं आदर्शवादी थे।	वर्तमान शिक्षा प्रणाली में शिक्षक–शिक्षार्थी सम्बन्ध भौतिकता पर आधारित हैं।
3	वैदिक शिक्षा प्रणाली में गुरू को सर्वोपरि माना गया था।	वर्तमान शिक्षा प्रणाली में शिक्षक का स्थान गौण हैं।
4	वैदिक शिक्षा प्रणाली में शिष्य का भरण–पोषण करने की जिम्मेदारी गुरू की ही थी। विद्यार्थियों से किसी प्रकार को कोई शुल्क नहीं लिया जाता था।	वर्तमान शिक्षा प्रणाली में शिक्षक विद्यार्थी की व्यक्तिगत जिम्मेदारियों से मुक्त तथा वेतनभोगी है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य मे वैदिक शिक्षा प्रणाली विद्यालय व्यवस्था का अध्ययन

क्र०सं०	वैदिक शिक्षा प्रणाली में विद्यालय	वर्तमान शिक्षा प्रणाली में विद्यालय
1	वैदिक शिक्षा प्रणाली में शिक्षा का स्थान गुरूकुल होता था जहॉ शिक्षार्थी अपना समस्त शैक्षिक कार्य/दिनचर्या पूरी करता था।	वर्तमान शिक्षा प्रणाली में गुरूकुल शिक्षा का स्थान समाप्त हो गया है।
2.	वैदिक काल में शिक्षा वर्ग विशेष के लिए थी और शिक्षार्थी की आवश्यकताओं को पूरी करने के लिए गुरूकुल सक्षम थे।	वर्तमान काल में शिक्षा सर्वजन के लिए है। इसी कारण विद्यालयों की संख्या अत्यधिक होती जा रही है।

3	वैदिक काल में पाठ्यवस्तु कम होने के कारण गुरूकुल स्वयं में पूर्ण थे। विद्यार्थी उच्च शिक्षा हेतु गुरूकुल से स्थानान्तरण करता था।	वर्तमान शिक्षा में तकनीकी, व्यावसायिक एवं उच्च शिक्षा होने के कारण विद्यालयों की संख्या निरन्तर बढ़ रही है।
4	वैदिक शिक्षा प्रणाली में गुरूकुल सम्पूर्ण विकास के स्थान थे।	वर्तमान शिक्षा प्रणाली में माध्यमिक विद्यालय में एक निश्चित स्तर की शिक्षा का ही प्रावधान है।

वर्तमान समाज में जहाँ भौतिकता की अंधी दौड, नैतिक पतन और मानसिक असंतुलन चरम पर है, वहाँ वैदिक शिक्षा की उपयोगिता अत्यधिक प्रासंगिक हो जाती है। यह शिक्षा न केवल व्यक्ति को एक योग्य नागरिक बनाती है, बल्कि उसे आत्मबोध की दिशा में भी अग्रसर करती है। अतः वैदिक शिक्षा की मूल आत्मा को आधुनिक संदर्भ में समझकर उसे शिक्षा नीति में पुनः स्थान देना समय की माँग है।

वैदिक शिक्षा के गुण जो वर्तमान शिक्षा में उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं–

- वैदिक शिक्षा प्रणाली समाज की आवश्यकतानुसार थी। शिक्षा को मनुष्य की 'तीसरी ऑख' कहा जाता था। व्यक्तित्व के विकास पर बल दिया जाता था। शिक्षा बिना किसी भेदभाव के उपलब्ध थी। अमीर–गरीब का कोई अन्तर नहीं था। जीवन–पर्यन्त शिक्षा थी। शिक्षा का अर्थ था आध्यात्मिक एवं भौतिक विकास। तथापि शिक्षा में बौद्धिक पहलू का स्थान सर्वोच्च था।
- शिक्षा गुरू के घर पर दी जाती थी जिसे प्रायः गुरू–आश्रम या गुरूकुल कहा जाता था। इसे शिक्षा की गुरूकुल पद्धति भी माना जाता था। शिक्षा प्रणाली पूर्णतः सुसंगठित थी यद्यपि इस पर राज्य का कोई नियन्त्रण नहीं था। शिक्षा उन सभी लोगों के लिए मुक्त रूप से उपलब्ध थी जो इसे प्राप्त करना चाहते थे। छात्रों का सतत् मूल्यांकन किया जाता था। प्रत्येक शिक्षण दिवस के पश्चात् अगले दिन का शिक्षण पूर्व के शिक्षण के मूल्यांकन के पश्चात् ही नवीन शिक्षण प्रारम्भ किया जाता था। शिक्षा प्राप्ति पर विशेष परीक्षाओं का प्रबन्ध था। गुरू का सन्तोष ही सबसे बड़ी परीक्षा थी। इस प्रकार प्रत्येक छात्र की व्यक्तिगत योग्यता की ओर ध्यान दिया जाता था।
- पाठ्यक्रम विस्तृत था, यद्यपि यह आध्यात्मिकता पर आधारित था, परन्तु व्यावसायिक भी था।

- मूल्य शिक्षा को शिक्षा का अभिन्न अंग माना जाता था। गुरू तथा शिष्य का निकटतम सम्बन्ध
- शिक्षा प्रकृति की गोद में दी जाती थी। इसीलिए प्रत्येक विद्यार्थी अपने वातावरण एवं प्रकृति के प्रति अपने उत्तरदायित्व को समझता था और अपने कर्तव्यों का पालन जिम्मेदारी पूर्व करता था।
- गुरू–शिष्य सम्बन्ध पिता–पुत्र सम्बन्धों पर आधारित था। छात्रों से कोई शुल्क नहीं लिया जाता था। तथापि, शिक्षा के समापन पर छात्र अपने गुरू को गुरूदक्षिणा या वस्तु के रूप में स्वेच्छा से भुगतान या उपहार देते थे। गुरू का स्थान समाज में उच्च था। सम्पूर्ण शिक्षा–प्रणाली व्यक्तिगत थी। विशेषतः शिक्षा काल सामान्य रूप में 12 वर्ष का होता था।
- कक्षाओं का आकार छोटा होता था जिससे शिक्षक का प्रत्येक शिक्षार्थी से व्यक्तिगत सम्बन्ध स्थापित होता था। शिक्षा व्यक्तिगत आधार पर दी जाती थी।
- वैदिक काल में इन्द्रिय निग्रह के अनुशासन को ही उत्तम अनुशासन समझा जाता था। गुरूकुल में 'सादा जीवन, उच्च विचार' को मानकर रहना पड़ता था। त्रुटि हो जाने पर गुरू अपने शिष्यों को शारीरिक दण्ड भी देता था। कभी–कभी दण्ड कठोर भी बहुत होता था।
- प्रभावी नैसर्गिक वातावरण शिक्षार्थी को अध्ययन एवं अधिगम के लिए तो प्रेरित करते थे, साथ ही प्रकृति के प्रति जाग्रत भी रखता था।
- वैदिक काल में गुरू निःशुल्क शिक्षा प्रदान करते थे। ब्राह्मणों का कर्तव्य शिक्षा देना था। शिक्षा समाप्त होने उपरान्त शिष्य का कर्तव्य था कि वह गुरू को दक्षिणा द्वारा प्रसन्न करे।
- प्रत्येक बालक की शिक्षा का प्रबन्ध था। निर्धनता शिक्षा पाने में किसी प्रकार से रूकावट नहीं डाल सकती थी। वैदिक शिक्षा पद्धति राजा–महाराजाओं की सहायता अथवा कृपा पर ही आश्रित न थी। जनसाधारण, अध्यापकों तथा छात्रों का इसमें विशेष सहयोग था।
- वैदिक काल में योग शिक्षा का भी पाठयक्रम में् अभिन्न स्थान था। योग का वर्णन प्रायः समस्त वैदिक साहित्य में मिलता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

- अग्रवाल एस0 के0 'शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त', मॉडर्न पब्लिकेशर्स, मेरठ।
- अल्टेकर, अनन्त सदाशिव 'प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति' नन्द किशोर एण्ड ब्रदर्स, वाराणसी।
- ओड, एल0के0 'शिक्षा के नूतन आयाम' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
- चौबे, एस0पी0 'भारतीय शिक्षा का इतिहास' विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
- दिनकर, रामधारी सिंह 'संस्कृति के चार अध्याय' उदयांचल, राष्ट्र कवि दिनकर पथ, पटना।
- स्वामी, विवेकानन्द 'धर्मतत्व' श्री रामकृष्ण आश्रम' घन्तौली, नागपुर।
- अथर्ववेद संहिता, चौखम्बा प्रकाशन, नई दिल्ली।
- ऋग्वेद संहिता, चौखम्बा प्रकाशन, नई दिल्ली।
- यर्जुवेद संहिता, चौखम्बा प्रकाशन, नई दिल्ली।
- अथर्ववेद संहिता, चौखम्बा प्रकाशन, नई दिल्ली।
- सामवेद संहिता, चौखम्बा प्रकाशन, नई दिल्ली।
- मनुस्मृति, मनु,चौखम्बा प्रकाशन, नई दिल्ली।
- भारतीय आधुनिक शिक्षा, एन0सी0ई0आर0टी0 प्रकाशन, नई दिल्ली।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 2020